मुहर लगा दी है|

महाभारत की

उपजीव्यता → [redacted]

[redacted] उपजीव्यता की परिभाषा की कसौटी पर महाभारत खरा उतरता है| इस आर्ष काव्य की छत्र-छाया में अनेक काव्यों ने आश्रय प्राप्त किया, स्फूर्ति प्राप्त की| महाभारत स्वयं इस बात का उद्घोष करता है कि कविवरों के द्वारा इसका आश्रय लिया जायेगा –

"इदं कविवरैः सर्वैराख्यानमुपजीव्यते|
उदयप्रेप्सुभिर्भृत्यैरभिजात इवेश्वरः||"

(आदिकाव्य/2/389)

अर्थात्

कविवरों के द्वारा इसका आश्रय लिया जायेगा, जैसे अभ्युदय चाहने वाले भृत्यों के द्वारा स्वामी का|

वस्तुतः महाभारत का अद्भुत वैशिष्ट्य उसे उपजीव्य काव्य के रूप में स्थापित करता है| धर्म, नीति, संस्कृति, ज्ञान - सभी इस ग्रन्थ का अभिन्न अंग हैं| यह विश्वकोष है| महाभारत की रोचकता, सरलता, सरसता और विद्वता ने परकालीन साहित्यकारों पर व्यापक प्रभाव डाला है|

आचार्य वाचस्पति गैरोला का कथन है कि यदि संस्कृत साहित्य से उन ग्रन्थों को अलग कर लिया जाए, जो महाभारत से प्रभावित हैं तो हमारे पास ऐसी बची हुई कृतियों की संख्या बहुत कम रह जायेगी| महाभारत अपने मूलरूप में उत्तरवर्ती संस्कृत-साहित्य का ऐसा ग्रन्थराट् है, जिसके छोटे-छोटे हिस्से कालिदास, माघ, भवभूति, बाण प्रभृति ग्रन्थकारों की कृतियों में देखने को मिल सकते हैं|

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

महाभारत की आश्रयणीयता केवल उसकी कथावस्तु को ही लेकर नहीं है, अपितु इसके काव्य तत्त्व, पात्रोत्कर्ष, वर्णन, आख्यानादि के द्वारा भी इसकी आश्रयणीयता निर्विवाद है। अपनी असामान्य विशेषताओं के कारण महाभारत को पञ्चम वेद के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। इसी महाभारत के गर्भ से गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज और गजेन्द्रमोक्ष नामक पञ्चरत्नों की सृष्टि हुई है।

महाभारतकार का कथन है कि इस काव्य से कवि बुद्धियाँ उत्पन्न होती हैं, जिस प्रकार पञ्चमहाभूतों से लोकत्रय की उत्पत्ति -

"इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धयः।
पञ्चभ्य इव भूतेभ्यो लोकसंविधयस्त्रयः॥"
(आदिपर्व / 2 / 385)

महाभारत न केवल प्राचीन भारतीय इतिहास का विश्वकोश है बल्कि ~~धर्म दर्शन, नीति~~ यह अनेक पुराकाल के अनेक लुप्तशास्त्रों और काव्यों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराता है। जो विद्वान साङ्गोपनिषद् वेदों को जानता है, परन्तु महाभारत को नहीं जानता, वह विचक्षण विद्वान नहीं है। इस काव्य को सुनकर अन्य श्रोतव्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता, जिस प्रकार कोयल की ध्वनि सुनकर कौये की ध्वनि अच्छी नहीं लगती -

"श्रुत्वा त्विदमुपाख्यानं श्राव्यमन्यन्न रोचते।
पुँस्कोकिलरुतं श्रुत्वा रूक्षाध्वाङ्क्षस्य वागिव॥"
(आदिपर्व | 2 | 384)

आचार्य रामजी उपाध्याय का अभिमत है कि किसी देश के कवियों के लिए एक मानदण्ड प्रतिष्ठित होना चाहिए, जिसके अनुसार वे वर्ण्य विषय के व्याख्यात्मक मूल्याङ्कन में समर्थ हों। महाभारत

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

में यह मानदण्ड विश्वतः प्रस्तुत किया गया है। मानदण्ड प्रस्तुत करने की रीति धर्मशास्त्रादि साहित्य के अन्य क्षेत्रों में सदा रही है, परन्तु काव्यात्मक मानदण्ड की परिधि अन्य क्षेत्रों के मानदण्डों से अधिक व्यापक होती है। परवर्ती कवियों के लिए महाभारत में सनातन मानदण्ड प्रस्तुत हैं। यथा-

"मनुष्या जगति श्रेष्ठाः पक्षिणां गरुडो वरः।
सरसां सागरः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम्॥
आदित्यस्तेजसां श्रेष्ठो गिरीणां हिमवान् वरः।
जातीनां ब्राह्मणः श्रेष्ठः श्रेष्ठस्त्वमसि धन्विनाम्॥"
(भीष्मपर्व/116/32-33)

इस प्रकार का मानदण्ड व्यक्तिगत जीवन की सभी प्रवृत्तियों और सामाजिक व्यवहारों में भी प्रतिष्ठित किया गया है। जैसे कर्ण का यह कहना कि यश जीवन से भी बढ़कर रक्षणीय है-

"मद्विधस्य यशस्यं हि न युक्तं प्राणरक्षणम्।
युक्तं हि यशसा युक्तं मरणं लोकसम्मतम्॥"
(वनपर्व/300/28)

महाभारत विश्वकोश क्यों है?- इसका उल्लेख आदिपर्व में प्राप्त होता है-

"ब्रह्मन् वेदरहस्यं च यच्चान्यत् स्थापितं मया।
साङ्गोपनिषदां चैव वेदानां विस्तरक्रिया॥
इतिहासपुराणानामुन्मेषं निर्मितं च यत्।
भूतं भव्यं भविष्यं च त्रिविधं कालसंज्ञितम्॥
जरामृत्युभयव्याधिभावाभावविनिश्चयः।
विविधस्य च धर्मस्य ह्याश्रमाणां च लक्षणम्॥
चातुर्वर्ण्यविधानं च पुराणानां च कृत्स्नशः।
तपसो ब्रह्मचर्यस्य पृथिव्याश्चन्द्रसूर्ययोः॥
ग्रहनक्षत्रताराणां प्रमाणं च युगैः सह।
ऋचो यजूंषि सामानि वेदाध्यात्मं तथैव च॥

Scanned with CamScanner

न्यायशिक्षाचिकित्सा च दानं पाशुपतं तथा।
हेतुनैव समं जन्म दिव्य मानुषसंज्ञितम्॥
तीर्थानां चैव पुण्यानां देशानां चैव कीर्तनम्।
नदीनां पर्वतानां च वनानां सागरस्य च॥
पुराणं चैव दिव्यानां कल्पानां युद्धकौशलम्।
वाक्यजातिविशेषाश्च लोकयात्राक्रमश्च यः॥
यश्चापि सवर्गं वस्तु तच्चैव प्रतिपादितम्।"
(आदिपर्व/1/62-70)

ऐसी स्थिति में महाभारत का उपजीव्य काव्य के रूप में प्रतिष्ठित होना सहज सम्भाव्य था और वही हुआ भी। परकालीन कवियों ने महाभारतरूपी प्राणवायु से अपने काव्यों को प्राणवान बनाया।

महाभारताश्रित काव्य :

ग्रन्थकार	रचना
भारवि	किरातार्जुनीयम्
माघ	शिशुपालवधम्
क्षेमेन्द्र	भारतमञ्जरी
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्
वासुदेव	युधिष्ठिरविजय
अमरचन्द्र	बालभारत
माधवाचार्य	यमकभारत
अगस्त्य	बालभारत
रामवर्मा	भारतसंग्रह
शिवसूर्य	पाण्डवाभ्युदय
रघुनाथ	नलाभ्युदय
भास	दूतघटोत्कच
	दूतवाक्य
	कर्णभार
	मध्यमव्यायोग
	पंचरात्र
	उरुभंग

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
भट्टनारायण	वेणीसंहारम्
राजशेखर	बालभारत
क्षेमीश्वर	नैषधानन्द
क्षेमेन्द्र	चित्रभारत
कंचनाचार्य	धनञ्जयविजय
रामचन्द्र	नलविलास
विश्वनाथ	सौगन्धिकाहरण
व्यास रामदेव	पाण्डवाभ्युदय
"	सुभद्रा परिणय
त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू
अनन्तभट्ट	भारतचम्पू
नारायणभट्ट	पांचालीस्वयंवरचम्पू
राजचूडामणि दीक्षित	भारतचम्पू
चक्रकवि	द्रौपदीपरिणय चम्पू

महाभारताश्रित काव्यों की शृंखला इतनी लम्बी है कि सभी का उल्लेख व्यवहारतः सम्भव नहीं है।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner